शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अध्ययन कुँजी

यीशु कौन है?

अध्याय 1 : यीशु मसीह कौन है?

परिचय

यह अध्याय शिष्यता के अनिवार्य तत्व मॉड्यूल के शीर्षक *यीशु कौन है?* का भाग है। सात अध्यायों की यह श्रृंखला मसीही दृष्टिकोण से यीशु के व्यक्तित्व व कार्यों का उल्लेख करती है, जिसमें उसकी पहचान, कार्य, शिक्षाएं और मृत्यु शामिल हैं। यीशु मसीह का मसीही विश्वास और धर्म का केन्द्र होने के कारण, शिष्यों का यीशु के बारे में जानना तथा उसके बारे में प्रचार करने वालों को यह जानना बहुत महत्वपूर्ण है कि कौन सी बातें यीशु को सबसे अनोखा, योग्य और भक्ति व अनुसरण करने योग्य बनाती है।

अध्ययन कुँजी को प्रति व्यक्ति के लिए इस मक़सद से तैयार किया गया है, ताकि वे स्वयं विशेष शिक्षा का गहनता से अध्ययन कर सकें। www.dehindi.org पर प्राप्त वीडियो और ऑडियो को शिष्यता के अनिवार्य तत्व नामक शिक्षा सामग्री के साथ इस्तेमाल किया जा सकता है।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

यीशु कौन है?

अध्याय 1 : यीशु मसीह कौन है?

यह किस बारे में है?

इस अध्याय का उद्देश्य यीशु के बारे में जानकारियों की जाँच करना है – वह कब और कहाँ रहा, और उसने अपने बारे में कौन कौन से दावे किये।

ताकि आप जान पाएं...

मसीही का अर्थ ''मसीह का अनुसरण करने वाले लोग हैं'', अतः यह जानने के लिए कि मसीही होने का क्या मतलब होता है और मसीही लोग क्या विश्वास रखते हैं, हमारे लिए यह समझना सबसे ज्यादा ज़रूरी है कि यीशु कौन है। क्या वह एक अच्छा शिक्षक था? मेहनती गुरू था? परमेश्वर का नबी था? या फिर वह इन सबसे बढ़कर था? यीशु मसीह के बारे में बताते समय या किसी को अपने विश्वास के बारे में बताने की तैयारी करते समय यीशु द्वारा खुद को लेकर की गयी उद्घोषणाओं के बारे में बताना बेहतर शुरूआत हो सकती है। यीशु कौन है, बताने की शुरूआत करने के लिए यह अध्याय अति उत्तम स्थान है।

प्रारम्भ

1. जब कोई अद्भुत या अचम्भित करने वाली घटना घटती है, तो हो सकता है कि हम कहें, ''यह तो चमत्कार हो गया!'' चमत्कार असल में है क्या, और यह बाकि घटनाओं से किस प्रकार भिन्न होता है?

2. यदि कोई आपसे पूछता है कि यीशु कौन है और वह मसीहियों के लिए क्यों महत्वपूर्ण है, तो आप क्या उत्तर देंगे?

अध्ययन

❖ **इतिहास में यीशु :** संसार के बहुत से धर्म यीशु के बारे में बात करते हैं। कुछ लोगों का कहना है कि यद्यपि वे धर्म पर विश्वास न कर के विज्ञान और मानवता पर विश्वास करते हैं, लेकिन फिर भी वे मानते हैं कि यीशु एक प्रसिद्ध हस्ती था। इस प्रकार इतिहास और धर्म विज्ञान की शिक्षा प्राप्त करने वाले किसी भी विद्यार्थी को खोजना चाहिये कि यीशु कौन था, और उसने अपने बारे में क्या दावा किया था।

➢ **उसने किस काल में जीवन बिताया :** ऐतिहासिक प्रमाण बताते हैं कि यीशु का जन्म यहूदा के बैतलहम नगर में, प्रथम शताब्दी के प्रारम्भ में हुआ था। इतिहासकार इस काल को 6 से 4 ईसा पूर्व बताते हैं, क्योंकि हेरोदेस राजा की मृत्यु 4 ईसा पूर्व में हुई थी। इस कारण हम बाइबल के कुछ पदों की सहायता से कह सकते हैं कि यीशु का जन्म इसी काल में हुआ था।

➢ तथ्यों की सत्यता का मूल्याँकन करने के लिये हम पूरे अध्याय में बाइबल से सहायता लेते रहेंगे। नीचे दिये गए प्रश्नों का उत्तर पता करने के लिये आपको प्रत्येक आयत को देखने की आवश्यकता होगी। निम्नलिखित वचनों को देख कर बताएं कि क्या आपको इन से यीशु के जीवनकाल के बारे में कुछ पता चलता है :

मत्ती 2:1	
लूका 1:5	
लूका 3:1–2	

ये विशेष तिथियाँ हमें बताती हैं कि यीशु सच में इतिहास की एक प्रसिद्ध हस्ती थे, वह वर्षों पहले बनाई गई मनगड़न्त कहानी नहीं थे। सुसमाचार हमें उन विशेष घटनाओं के बारे में बताते हैं, जिन्हें इतिहास की मुख्य घटनाओं के रूप में जाना जाता है।

➢ **यीशु की वंशावली :** वंशावली के आधार पर भी यीशु अनोखे थे। सुसमाचार हमें बताते हैं कि उनका जन्म असाधारण रूप से एक कुंवारी के द्वारा हुआ था। उनकी मां मरियम वैवाहिक सम्बन्ध के बजाए पवित्र आत्मा की सहायता से गर्भवती हुई थी।

➢ मत्ती 1 अध्याय और लूका 3:23–28 को पढ़ें। आपको उसे पूरा पढ़ने की आवश्यकता नहीं, परन्तु एक सरसरी निगाह डालें।

- मत्ती 1 अध्याय हमें दाऊद से होते हुए इब्राहम की वंशावली तक की जानकारी प्रदान करता है। यह वंशावली यीशु के सांसारिक पिता युसूफ की वंशावली है। युसूफ का पहिलौठा पुत्र होने के नाते, यह वंशावली यीशु को अब्राहम का वंशज और दाऊद के सिंहासन का वारिस बनाती है।

- लूका 3:23–28 हमें दाऊद से शुरू कर के आदम तक की वंशावली के बारे में बताती है। यह वंशावली उसकी माता मरियम के पिता हेली की वंशावली है। यह वंशावली प्रमाणित करती है कि खून के रिश्ते व अधिकार दोनों की तरीकों से यीशु दाऊद के परिवार का एक हिस्सा था।

- यीशु कौन था और वह क्या करने के लिये आया था, यह दिखाने के लिये वंशावली का अध्ययन करना बहुत महत्वपूर्ण है। वह दाऊद के घराने में आने वाले राजा के सम्बन्ध में कह गई भविष्यद्वाणियों को पूरा करने वाला था। वह "अनन्तकाल का राजकुमार" स्वयं यीशु था।

➢ **यीशु का जीवन व उसकी सेवकाई :** मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना रचित सुसमाचार हमें यीशु की सेवकाई व उसके जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में बताते हैं, जिन से हमें यीशु के बारे में बुनियादी जानकारियां हासिल होती हैं।

- यीशु गलील कि नासरत में पला–बढ़ा, और उसने आसपास के इलाकों में यात्रा करते हुए यरूशलेम में अपनी सेवकाई पूरी की थी।
- उसने अपने गोदधारी पिता युसूफ से बढ़ई के काम को सीखा था (मत्ती 13:55)।
- उसके अन्य भाई निम्नलिखित थे – याकूब, योसेस, यहूदा और शिमौन।
- हालांकि यह प्रमाणित है कि यीशु पढ़, लिख, तर्क और विवाद कर सकता था, लेकिन हमें इस बात की कोई जानकारी नहीं है कि उसने मन्दिर में शिक्षा प्राप्त करने कि अलावा कोई औपचारिक शिक्षा प्राप्त की थी या नहीं।
- उसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के द्वारा बपतिस्मा प्राप्त किया था।
- उसने आराधनालय, गलियों और अलग–अलग जगहों पर उपदेश दिये व चमत्कार किये।
- उसके बहुत से चेले व अनुयायी थे, और बारह सबसे नज़दीक चेलों को बाद में प्रेरित कहा गया।
- उसे मसीहा होने का दावा करने पर दण्ड का सामना करना पड़ा। उसकी पेशियां महायाजक, कैफा और रोमी गवर्नर, पेन्तुस पिलातुस के सामने हुई थी, जिन्होंने यीशु को मृत्यु की सजा सुनाई थी।
- यीशु को क्रूस पर चढ़ाया गया, वह मारा गया और कब्र में गाड़ा गया और चमत्कारी ढंग से वह तीसरे दिन मुर्दों में ये जीवित हो उठा। उसके बाद वह कई लोगों पर जीवित अवस्था में प्रगट हुआ, जिन्होंने उसे क्रूस पर मरते हुए देखा था (1 कुरिन्थियों 15:3–8)।

❖ **यीशु ने अपने बारे में क्या कहा?** यीशु मसीह इतिहास में क्या थे, और आज वह हमारे लिये क्या मायने रखते हैं, इन बातों का अध्ययन करने के लिये हमारा यह जानना अति महत्वपूर्ण है कि यीशु ने अपने बारे में क्या कहा और दूसरों ने उसके बारे में क्या कहा? उसके द्वारा कही गई बातें बेमायने नहीं थीं। वे बातें विशिष्ट तौर पर बताती हैं कि यीशु कौन था और वह इस संसार में क्या करने के लिये आया था। ये किसी महज़ नबी या किसी सज्जन व्यक्ति द्वारा किये गए दावे ही नहीं हैं, बल्कि उससे बढ़ कर हैं।

➢ **उसने मसीह होने का दावा किया :** सामरी स्त्री से बातें करते समय यीशु ने साफ साफ कहा कि वह मसीह है। उस स्त्री ने उससे कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रीस्त कहलाता है, वह आने वाला है; जब वह आएगा, तो हमें सब बातें बता देगा।" यीशु ने उससे कहा, "मैं जो तुझ से बोल रहा हूं वही हूं" (यूहन्ना 4:25–26)।

➢ **उसने पापरहित होने का दावा किया :** जब यीशु इस धरती पर थे, तब बहुत से धार्मिक अगुवों ने उसकी परीक्षा की। यूहन्ना 8:46–47 और यूहन्ना 8:28–29 पढ़ें। उसके पश्चात् लिखें कि उसने पाप के बारे में क्या कहा!

मजे की बात यह थी कि इतना करने पर भी, कोई यीशु में कोई ग़लती नहीं ढूँढ़ पाया। वह यहूदियों का राजा होने के लिये दण्डित किया गया था (यूहन्ना 10:36–38; लूका 23:40–43)। बाद में पौलुस इस दावे के महत्व के बारे में बताता है (2 कुरिन्थियों 5:21)।

- **उसने परमेश्वर तक पहुँचने के लिये एकमात्र मार्ग होने का दावा किया :** यीशु ने लोगों को शिक्षा देते हुए यह कहा कि वह पिता तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग है तथा परमेश्वर पिता उस में होकर प्रगट हुए हैं। उसने कई बार "मैं हूँ!" वाक्य का उपयोग किया, जिसका इस्तेमाल परमेश्वर अपनी पहचान के तौर पर किया करते थे (निर्गमन 3:14)। इन वाक्यों को पढ़ें :
  - "इससे पहले कि अब्राहम था, मैं हूँ" (यूहन्ना 8:58)।
  - "द्वार मैं हूँ। यदि कोई मेरे द्वारा प्रवेश करे, तो उद्धार पाएगा" (यूहन्ना 10:9)।
  - "अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा भेड़ों के लिये अपना प्राण देता है" (यूहन्ना 10:11)।
  - "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, यदि वह मर भी जाए, तौभी जियेगा" (यूहन्ना 11:25)।
  - "मार्ग, सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता" (यूहन्ना 14:6)।

- क्या ये दावे किसी साधारण मनुष्य के जीवन में पूरे हो सकते हैं? क्या भविष्यद्वक्ता के द्वारा भी इस प्रकार के दावों को करना सम्भव है? या यीशु, भविष्यद्वक्ताओं और सम्पूर्ण मानवजाति से श्रेष्ठ होने का दावा कर रहे थे?

- **उसने पापों को क्षमा करने का दावा किया।** यीशु लोगों को चंगा करता तथा उनके पापों को क्षमा करता फिरा। क्योंकि पाप हमेशा परमेश्वर के खिलाफ किया जाता है, इसलिये परमेश्वर को छोड़ और कौन पापों को क्षमा कर सकता है? लूका 5:20–21 और लूका 1:48–49 पढ़ें। यीशु के कथन के अनुसार कौन पाप क्षमा कर सकता है?

- **उसने अनन्त जीवन देने का दावा किया।** यूहन्ना 10:17 और यूहन्ना 10:28–30 पढ़ें। यीशु अनन्त जीवन के बारे में क्या कहते हैं?

यीशु ने लोगों को यह नहीं बताया कि वे किस प्रकार अनन्त जीवन प्रदान कर सकते हैं, परन्तु उसने कहा कि वह उन्हें यह जीवन प्रदान कर सकता है। यीशु मसीह पर विश्वास करने से हमें अनन्त जीवन प्राप्त हो सकता है। मनुष्यों से इसे प्राप्त करना सम्भव नहीं है (यहां तक कि परमेश्वर के नबी भी यह जीवन नहीं दे सकते)।

- यीशु के ये दावे प्रगट करते हैं कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य का पुत्र, प्रतिज्ञा किया हुआ मसीह तथा स्वयं परमेश्वर था। यीशु ने लोगों से यह नहीं कहा कि वह परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता, शिक्षक या मार्गदर्शक है; उसने दावा किया कि वह परमेश्वर का प्रतिज्ञा किया हुआ वरदान या उपहार है।

❖ **दूसरे लोग यीशु के बारे में क्या कहते हैं?** सुसमाचार की चार पुस्तकों के पश्चात् हमें प्रेरितों या अभिषिक्त शिक्षकों के द्वारा लिखे गए पत्र मिलते हैं, जिन में उन्होंने उन प्रकाशनों का बखान किया है, जिसे उन्होंने परमेश्वर से प्राप्त किया था। इन पत्रियों में यीशु के बारे में कहे गए कुछ वाक्यों को समावेशित किया गया है।

- **परमेश्वर का पुत्र** – यीशु को परमेश्वर का पुत्र कहा गया। ऐसा कहने से उसका महत्व परमेश्वर से कम नहीं हुआ, बल्कि उस में परमेश्वर के समान ही सामर्थ्य, अधिकार और आदर पाया जाता है। यीशु ने अपने आप को परमेश्वर पिता द्वारा भेजा गया पुत्र तथा ऐसा पुत्र बताया, जो अपने पिता के साथ नज़दीकी में होकर प्रार्थना कर सकता था। दूसरे लोगों ने भी उसे परमेश्वर का पुत्र कह कर सम्बोधित किया। पढ़ें कि दूसरों ने उसके बारे में क्या कहा। किसने यीशु को परमेश्वर के पुत्र के रूप में पहचाना?

1 यूहन्ना 5:20 मत्ती 14:33 लूका 22:70 यूहन्ना 10:30	

- **मनुष्य का पुत्र** – यीशु ने प्राथमिक रूप में स्वयं को मनुष्य के पुत्र के रूप में सम्बोधित किया। नये नियम में "मनुष्य के पुत्र" का उपयोग 88 बार किया गया है। किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा का मूल्याँकन करें, तो इस उपनाम में वह व्यक्ति बहुत साधारण प्रतीत होगा। लेकिन यह "उपनाम" उसकी सम्पूर्ण ईश्वरीयता और सम्पूर्ण मानवीयता को दर्शाता है: इस प्रकार यीशु में दो प्रकार के स्वभाव विद्यमान हैं। यह वाक्य हमें दानिय्येल 7:13–14 की ओर इशारा करता है, जहाँ पर एक विशिष्ट व्यक्ति का उल्लेख किया गया है, जो अनन्तकाल के राज्य पर अधिकारी होगा और सारी जातियां उसकी उपासना करेंगी। इसके अतिरिक्त यीशु ने कहा कि मनुष्य के पुत्र की बुराई करना ईश निन्दा है। यीशु को मनुष्य का पुत्र कैसे कहा गया?

मत्ती 12:40 मत्ती 16:27 प्रेरितों के काम 7:56	

- **मसीह या मसीह प्रभु –** यहूदी लोग बड़ी जिज्ञासा के साथ मसीह के आने का इन्तज़ार कर रहे थे, जो आकर उन्हें बचाएगा। वे सोचते थे कि कोई सेना या कोई राजकीय अगुवा आकर उन्हें राजनैतिक दबाव से छुटकारा देगा। परन्तु यीशु उन्हें पापमय स्वभाव से बचाने आया। यीशु के अनुयायियों ने इस बात को पहचाना कि उसके जीवन के द्वारा मसीह के बारे में की गई भविष्यद्वाणियां पूरी हो रही थीं। "मसीह" का अर्थ एक अभिषिक्त जन है। "प्रभु" का अर्थ अधिकारी या राजा है। दोनों ही शब्द मसीह से सम्बन्धित हैं। किसने यीशु को प्रभु, मसीहा या मसीह कहा?

यूहन्ना 1:40–42 मरकुस 8:29 गलातियों 3:16	

- **परमेश्वर का वचन –** बाइबल के लेखकों ने यीशु को परमेश्वर का वचन कहा। यह विशिष्ट उपनाम यीशु के शारीरिक रूप में जन्म लेने से पहले उसके विद्यमान होने की बात को प्रमाणित करता है। वह ही परमेश्वर की इच्छा को पूरा कर सका, जिसने संसार की सृष्टि की और उसी के द्वारा परमेश्वर ने मानवजाति पर अपने आप को पगट किया। अगर को "वर्ड" अर्थात् "शब्द" को यूनानी भाषा में सुनता, तो उसका अर्थ "सर्वश्रेष्ठ परमेश्वर और मानवजाति के बीच सेतु" था। यह उपनाम दर्शाता है कि परमेश्वर की इच्छा, और उसका स्वभाव यीशु मसीह में होकर प्रगट किया गया है। बाइबल, परमेश्वर के वचन के रूप में यीशु की पहचान के बारे में क्या कहती है?

यूहन्ना 1:1–3 यूहन्ना 14:9 कुलुस्सियों 1:15–17	

❖ **आप क्या कहते हैं?** यीशु द्वारा किये गए दावों के बारे में हमें सबसे पहले यह निर्णय करना है कि हम उन पर विश्वास करते हैं, या नहीं।

- यीशु ने मानवीय रूप में सर्वशक्तिमान परमेश्वर होने का दावा किया – जो पिता की समानता में उसके साथ जुड़ा था। उसने कहा कि वह जगत की उत्पत्ति से पहले था – और सृष्टि को उसके द्वारा और उसके लिये रचा गया था। यीशु पाप क्षमा करने पर भी स्वयं पापरहित था।

- मार्था ने यीशु पर विश्वास किया, जो उस लाज़र की बहन थी, जिसे यीशु ने मृतकों में से जीवित किया था। यूहन्ना 11 अध्याय में दिये गए उदाहरण में मार्था से एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा गया है, जिस प्रश्न का हमें भी उत्तर देना चाहियेः "क्या तू विश्वास करती है?" – यीशु ने उससे कहा, "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, यदि वह मर भी जाए, तौभी जीवित रहेगा। और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनन्तकाल तक न मरेगा। क्या तू इस बात पर विश्वास करती है?" उसने उससे कहा, "हां, हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर का पुत्र मसीह, जो जगत में आने वाला था, वह तू ही है।" (यूहन्ना 11:25–27)।

- आपको सबसे पहले निर्णय लेना है कि क्या आप यीशु की कही गई बातों पर विश्वास करते हैं, और क्या आप उस पर भरोसा करने के लिये तैयार हैं?

सारांश

- संसार में बहुत से लोग यीशु या उसकी पहचान के बारे में बहुत सी बातें करते हैं। अगर कोई धर्म का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी है, तो उसे सबसे पहले पता करना चाहिये कि यीशु कौन था और उसने अपने बारे में किन बातों के सत्य होने का दावा किया।
- यीशु ने एक विशिष्ट ऐतिहासिक काल में धरती पर जीवन व्यतीत किया; और उसकी वंशावली सुसमाचारों में पायी जाती है।
- सुसमाचार हमें यीशु की सेवकाई व उसके जीवन के बारे में चार अलग अलग पहलुओं का उल्लेख करते हैं, जिनके द्वारा हम उससे सम्बन्धित बुनियादी जानकारी को प्राप्त कर सकते हैं।
- यीशु ने पापरहित, परमेश्वर तक पहुँचने का एकमात्र मार्ग होने, पाप क्षमा करने और अनन्त जीवन देने योग्य होने का दावा किया।
- दूसरों ने भी यीशु के बारे में अपने विचार व्यक्त किये और उसे परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य का पुत्र, मसीहा और परमेश्वर का वचन कह कर सम्बोधित किया।
- आपको सबसे पहले निर्णय लेना होगा कि क्या आप यीशु द्वारा किये गए दावों को स्वीकार करते हैं? यह वह व्यक्ति था, जिसने मानवीय रूप में सर्वशक्तिमान परमेश्वर होने का दावा किया – जो पिता की समानता में उसके साथ जुड़ा था।

चिन्तन करने योग्य प्रश्न

1. आपके विचार से यीशु की पहचान इतना महत्वपूर्ण मुद्दा क्यों है?

2. यदि हम यीशु के दावों को स्वीकार करते हैं, तो हमारे जीवन में कैसे बदलाव आने चाहिये?